मुनि लब्धि विजयजी कृत हरिबल मछीनो रास.

जीवदयाफलमाहात्म्यरूप.

ए रासने यथामति शुद्ध करी करुणामय सम्यक्दृष्टि जनोने वांचवाने अर्थे

श्रावक भीमसिंह माणकें

श्री मोहमयी पत्तन मध्ये

निर्णयसागर नामक मुद्रा यंत्रमां छपावी

प्रसिद्ध कर्यो छे.

संवत् १९५५, सने १८९९

अथ

पंमित लब्धिविजय विरचित

हरिवलमछीनो रास प्रारंभः

॥ दोहा ॥

॥प्रथम धराधव जगधणी,प्रथम श्रमण पण एह॥ प्रथम तीर्थंकर जग जयो, प्रथम गुरू पत्नणेह ॥ १ ॥ विश्वस्थिति कारक प्रथम, कारक विश्व उद्योत ॥ धारक अतिशय आदि जिन,तारक नवनिधि पोत ॥ २ ॥ लघुवय इक्षा इक्षुनी, पारण दिन पण तेह ॥ मिष्ट इष्ट जेहने सदा, नाजिनंदन प्रणमेह ॥ ३ ॥ सिद्ध धूना संगमें, अठक ठक्यो दिन रात॥ हुं तस पदपंकज नमुं, नित्य उठी परनात ॥ ४ ॥ हंसासन जें सरसती, वरसति वचन विलास ॥ कविजन केरा हृदयमें, करती बुद्धि प्रकाश ॥ ५ ॥ ते हुं प्रणमुं नारती, वारति जड अंधार ॥ मुऊ मन मंदिरमें वसी, करवा मुऊ उपगार ॥ ६ ॥ माता मुऊ महोटो करी, देजें वचन रसाल ॥ रंगरंगीली जनसत्ना, सांजले थइ उज

माल ॥ ७ ॥ जे हुं चाहुं चित्तमें, ते तूं करजे मात ॥ वचननी रचना रस दियो, वाधे तुझ आख्यात ॥ ॥ ८ ॥ गुरु ज्ञाता माता पिता, गुरुथी अधिक न कोय ॥ देवधर्म गुरु उलख्या, वलिहारी गुरु सो य ॥ ए ॥ ते गुरु चरण नमी करी, नवियणने हित कार ॥ रास रचुं हरिवल तणो, पुण्य उपर अधि कार ॥ १० ॥ पुण्यें वंछित पामीयें, पुण्यें लहि नव नीध ॥ पुण्यें महिला संपजे, पुण्यें रूद्ध समृद्ध ॥ ११ जीवदया पाली जिणें, तिण उपराज्युं पुण्य ॥ सुर नर तस सानिध करे, माने ते दिन धन्य ॥ १२ ॥ जीव दयाथकी पामियो, हरिवल मच्छी राय ॥ तास संबंध सुणतां थकां, सघलां पातक जाय ॥ १३ ॥ रास स रस सुणतां थकां, जे को करशे वात ॥ तेहने तस व च्चन्न तणा, सम देवं छवं सात ॥ १४ ॥ जिम मृग नाद लिणों रहे, निसुणे थइ एकरंग ॥ तिम सुणजो नवि यण तुमें, आणी चित्त अनंग ॥ १५ ॥

॥ ढाल पहेली ॥

॥ रसीयानी देशी ॥ लक्ष योजननो रे जंबुद्वीप ए कह्यो, शाश्वत वर्त्तुलाकार ॥ सोनागी ॥ तेहमें क्षे त्र ए नंद सोहामणुं, कुलगिरि सात कह्या सार ॥

सो० ॥ १ ॥ नाव धरीने रे नवि तुमें सांभलो ॥ रसि
या देई रे कान ॥ सो० ॥ सुणतां सुणतां रंग रस ऊ
पजे, मुखमें राख्यां जिम पान ॥सो० ॥२॥ना०॥ क्षेत्र
तिनमें करमी वसे तिहां, असि मशि कृषी रोजगार ॥
सो० ॥ आजीविकायें जीव जीवाडवा, आख्या ए
तीन व्यापार ॥सो०॥३॥ना०॥ बीजां क्षेत्र जे जुगलां
धर्मनां, भाख्यां अकरमि उदार ॥ सो० ॥ तिहां को
व्यापार तीनमें नवि लहे, छे कल्पवृक्षना आहार ॥
सो०॥४॥ना०॥ तेहमें पटयुगलादिक क्षेत्र जे, भरत ने
ऐरवत विदेह ॥ सो० ॥ ए नव क्षेत्र जंबुद्वीपमां, शो
भित शोभे छे एह ॥सो०॥५॥ना०॥ ए नव क्षेत्र सात
छे कुलगिरि, तेहनो अतिही विस्तार ॥ सो० ॥ क्षेत्र
समास में गुरुमुख सांभली, धारवो तास विचार ॥
सो०॥६॥ना०॥पण इहां हरिबल मछी रायनुं,चरित्र सु
णो चित्त लाय ॥ सो० ॥ लोक उखाणो जगमां इम
कहे, जे परणे ते गवाय ॥ सो० ॥ ७ ॥ ना० ॥ हवे
इहां जंबुद्वीपें अति भलुं, भरत क्षेत्र कहाय ॥ सो०
॥ पांचशें छवीश योजन पटकला, धनुषाकारें सोहा
य ॥ सो० ॥ ८ ॥ ना० ॥ सहस बत्रीश ते जन
पद तेहमां, तेहना खत खंम होय ॥ सो० ॥ तिण

वचमें पड्यो वैताढ्य रजतनो, जोयण पचासनो जोय ॥ सो० ॥ ए ॥ जा० ॥ पटखंममें खंम तिन तिन तेणें कथा, दक्षिण उत्तर श्रेणि ॥ सो० ॥ सो ल सोल सहस ए जनपदमें रहे, वसती अनार्य नी तेण ॥ सो० ॥ १० ॥ जा० ॥ साढा पचवीश आरय अति जला, केकै अर्ध समेत ॥ सो० ॥ श्रीजि नधर्मनो वास तिहां लहे, सहस बत्रीश मध्य एत ॥ ॥ सो० ॥ ११ ॥ जा० ॥ ते माटे इहां आरय देशमां, कनकपुरी अनिधान ॥ सो० ॥ साव सोनामय सुंदर शोजती, अमरपुरी उपमान ॥ सो० ॥ १२ ॥ जा० ॥ नलिनीगुल्म विमान तणी परें, एकविश जूमि आ वास ॥ सो० ॥ रतन जटितमें गोख विराजता, कर ता तेज प्रकाश ॥ सो० ॥ १३ ॥ जा० ॥ कुंतीआ वण परें हटश्रेणि राजती, ढाजती विजयनी पंक्ति ॥ सो० ॥ देश देशांतर विणज करे बहु, वरसे वसु धारा शक्ति ॥ सो० ॥ १४ ॥ जा० ॥ धनवंत धनद जंमारी सारिखा, वसे तिहां नगरीमां लोक ॥ सो० ॥ पंच विषयना रसमेंलीणा रहे, जोगी चातुर लोक ॥ ॥ सो० ॥ १५ ॥ जा० ॥ षट दरशनना पोषक जन बहु, पाले निज निज धर्म ॥ सो० ॥ घर घर शत्र

कार करे घणा, लेह्वा शिव सुख हर्मे ॥ सो० ॥ १६ ॥
॥ न्ना० ॥ जिनशासनना देवल दीपतां, वत्रीश घडा
प्रासाद ॥ सो० ॥ चोराशी मंमप अति चौंपशुं, कर
ता स्वरगशुं वाद ॥ सो० ॥ १७ ॥ न्ना० ॥ दंमधजा
अतिपवनें फरहरे, नाचे माचे मनरंग ॥ सो० ॥ ध
न्य दिवस मुज जिन शिर हुं चढी,पावन करवा मुक
अंग ॥ सो० ॥ १८ ॥ न्ना० ॥ श्रीजिन केरी नगति करे
सदा, नविक जीव अपार ॥ सो० ॥ तीर्थंकर पद ते
उपराजता, रावणनी परें सार ॥ सो० ॥ १ए॥ न्ना० ॥
वरण अढार वसे तिण नगरीयें, जाणियें सुर अव
तार ॥ सो० ॥ गढ मढ मंदिर पोलि शोन्ना घणी, नू
रमणी उरहार ॥ पागांतर॥नगर कनकपुरनामें शोन्न
तुं, स्वर्गपुरी अनुहार ॥ सो० ॥ २० ॥ न्ना० ॥ नंदनवन
सम परिमल वाटिका, चिहुंदिशि नगरीनी पास ॥
॥ सो० ॥ वापी कूप सरोवर जल नखां,खटऋतु फलें
सुवास ॥ सो० ॥ २१ ॥ न्ना० ॥ काल डुकाल ते को
नवि उलखे, अहोनिश सुखनी ठे वात ॥ सो० ॥ ईति
उपद्रव सुपनें नवि जाणे, पुह्वीयें प्रगटीए ख्यात
॥ सो० ॥ २२ ॥ न्ना० ॥ कनकपुरीना ए गुण सां
नली, लाजी लंका तिवार ॥ सो० ॥ जलनिधिमां

जइ बूडी बापडी, जाणे सकल संसार ॥ सो० ॥ ॥ २३ ॥ ना० ॥ स्वर्गपुरी पण नलमां जइ रही, नि सुणी तेहना अवाज ॥ सो० ॥ एह नगरी कनक पुरी तणी, दिन दिन चढती छे लाज ॥ सो०॥ २४ ॥ ॥ ना०॥ कनक पुरीनां रे वयण वखाणतां, पहली पहेली ए ढाल ॥ सो० ॥ लब्धिविजय कहे नवियण सांजलो, आगल वात रसाल ॥ सो० ॥ २५॥ ना० ॥

॥ दोहा ॥

॥तिण नगरीयें राजवी, वसंतसेन नूपाल ॥ न्यायि निपुण वसुदेव ज्युं, करुणावंत कृपाल ॥ १ ॥ वाक्य वछल हरिचंद जिस्यो, छुजबलि नीमसमान ॥ अरिय ण सघला वश करी, उतार्यां तस मान ॥ २ ॥ पर जाने पाले सदा, करे हथेली छांह ॥ दाण जगात दिसे नही, करदंम बंधन क्यांह ॥ ३ ॥ करदंम मुनि देउल शिरें, बंधन स्त्रीशिरकेश ॥ वसंतसेन नृप इ णि परें, पाले राज्य विशेष ॥ ४ ॥ तस पटराणी पद्मिनी, रूपें रंन समान ॥ शील सुरंगी शुनमती, व संतसेना अनिधान ॥ ५ ॥ मालती मधुकरनी परें, प्रीतडी जिम जल मीन ॥ तिम नृपराणी एकमना, रंगें रहे लय लीन ॥६॥ दोगुंदक सुरनी परें, पंचविषय

सुख भोग ॥ नृपराणी विलसे सदा, पूर्वपुण्य संयोग॥७॥

॥ ढाल बीजी ॥

॥ रहो रहो रहो रहो वाल्हा ॥जगजीवन ॥ ए देशी ॥
विलसे भोग ते राजवी, वसंतसेना साथ लाल रे॥ जन्म सफल लेखे गणे, जाणे पाम्यो आथ लाल रे ॥ १ ॥ सुगुण सनेहा सांभलो, आगल वात रसाल ला० ॥ जीवदया पाली जिणें, ते लह्यो मंगल माल ला०॥ ॥ २ ॥सु०॥ राज ऋद्धि रमणी घणी, पूरवपुण्यपसाय ला० ॥ सुरपतिनी परें राजवी, पुहवीयें ते गवराय ला० ॥ ३ ॥ सु० ॥ पण तस पुत्र ते को नही, तेणें चिंतातुर होय ला० ॥ आय उपाय करे घणा, टेकी न लागे कोय ला० ॥४॥सु०॥ देव दाणव लख जो मले, तो पण तिणथी न थाय ला० ॥ कर्म आगल चाले नही, जो करे लक्ष उपाय ला० ॥ ५ ॥ सु० ॥ माहा देव महोटो महीयलें, लोकमांहे परसिद्ध ला० ॥ पार्वती सरखी नारीने, करमें पुत्र न दीध ला० ॥ ॥ ६ ॥ सु० ॥ तो बीजानुं शुं गजुं, ए सवि कर्मनां काम ला० ॥ कर्म सखाई जो हुवे, मनवंछित फले ताम ला० ॥ ७ ॥ सु० ॥ एकनें शुभ कर्में करी, पुत्र तणे घरे पुत्र ला० ॥ नाम करे चिहुं खूंटमां,

राखे घरनां सूत्र ला० ॥ ८ ॥ सु० ॥ एकने पुत्र विना सही, सूनां तस आगार ला० ॥ प्रेत मंदिर सम जाणीयें, पुत्र विना घरबार ला०॥ ए ॥सुं०॥ पुत्र विना गति को नही, पुत्र विना नही स्वर्ग ला०॥ लौकिक मतना शास्त्रमें,जाषे ऋषिजन वर्ग ला० ॥१०॥सुं०॥

उक्तंच ॥ गाथा ॥ गेहं तंपि मसाणे,जह्य न दीसंति धूलि धूसरछाया ॥ उठंत पडंत रडंत, दो तिनि मिंजा न दीसंति ॥ १ ॥

॥ श्लोक ॥ अपुत्रस्य गतिर्नास्ति,स्वर्गोनैवच नैवच॥तस्मात्पुत्रमुखं दृष्ट्वा, पश्चात् धर्मं समाचरेत् ॥

॥ पूर्व ढाल ॥

॥अहोनिश इम चिंता करे, वसंतसेन जूपाल ला०॥ तिण अवसर एक ज्योतिषी,आवी मल्यो ततकालला० ॥ ११ ॥ सु० ॥ आगम नीगमनी कहे, शास्त्र तणे अनुसार ला० ॥ एहवो पंमित देखीने, नरपति हरख्यो अपार ला० ॥ १२ ॥ उठीने प्रणीपत करे, जाव धरी मनमांहि ला० ॥ मुद्रा सहित फल फूलशुं, पुस्तक पूजे उछाहि ला० ॥ १३ ॥ सु० ॥ बे कर जोडी वीनवे, कीजें करुणा कृपाल ला० ॥ प्रश्न जुवो प्रज्जु माहरे, होशे वालगोपाल ला०॥ १४ ॥

सु० ॥ तव पंभित तक जोश्ने, वेला साधी सार ला० ॥ १५ ॥ सु० ॥ लमनवलें कहे रायने, सांन्न लजो सुविचार ला० ॥ पुत्र तो तुऊ करमें नही, पूरव न्नावी न्नोग ला० ॥ पण एक पुत्री ढे सही, पूरव पुण्य संजोग ला० ॥ १६ ॥सु० ॥ रूपें रंन्नासारिखी,नंदिनी तोह्शे तुऊ ला० ॥ जाणीयें वीजी शारदा, प्रगट होश्ते गुऊ ला०॥१७॥सु०॥एम कहीनें विप्र ते गयो, लेइ वंछित दान ला०॥ नृप मनमें हरख्यो घणुं, जिम रवि कज इकतान ला० ॥ १८ ॥ सु० ॥ विप्र वचन ते योगथी, राणी गन्न धरेय ला० ॥ वसंत ऋतु फल फूलशुं,शोन्नित सुपना लहेय ला०॥सु०॥१ए॥जागी तव नृपने कहे, सुपना तणो अधिकार ला० ॥ सांन्नली नृप हरख्यो घणुं, त्रूग श्रीकिरतार ला० ॥ २० ॥ ॥ सु० ॥ हरखित थइ राणी हवे, करे ते गन्नजतन ला०॥ अनुक्रमें मास पूरा थई,जन्मी पुत्री रतन्न ला० ॥ २१ सु०॥ हुवां हरख वधामणां,घर घर मंगलमाल ला० ॥ लब्धिजय रंगें करी, पन्नणी वीजी ढाल ला०॥

॥ दोहा ॥

॥ जन्मोत्व अति हे करे, वसंतसेन न्नूपाल ॥ मणि माणक मोती घणा, वरसे ज्युं वरसाल ॥ १ ॥ कुंकुम

केशर छांटणां, कीज करेह विशाल॥सोहव सवि टोलें म ली, गावे गीत रसाल ॥ २ ॥ घर घर गूडी उछले, घर घर झोणी माल ॥ घर घर तोरण बांधीयां, दीसे ज्ञा क जमाल ॥ ३ ॥ नृत्य करे नटुवा नला, खेले नवनव खेल ॥ वंदीजन मूक्या परा, उपजावे रंगरेल ॥ ४ ॥ इम उछव करतां थकां, बोल्या दिन ते वार॥नगरीजन सहु पोपीया, देई मिष्ट आहार ॥ ५ ॥ निज कुटुंब मेली करि, पुत्री नाम ववीज ॥ सुपन तणा अनु सारथी, वसंतसिरी ते कहीज ॥ ६ ॥ कुमरी ते दिन दिन वधे, ज्युं वधे रुकुदंम ॥ चंड्कलाजिम बीजथी, वाधे तेज अखंम ॥ ७ ॥ इम करतां वधती थइ, पंचवरसनी बाल ॥ शुन्नलग्न लेई करी, लइ थापी नीशाल ॥ ८ ॥ खटदरशननां शास्त्र जे, तेहमां थई प्रवीण॥रंग राग ना टक कला, यंत्रवाजित्र मिलीन ॥ ए ॥ पट नापा लह ती मुखें, चोशठ कलानिधान ॥ अन्निनव जाणे शारदा, प्रगट थइ सावधान ॥ १० ॥ इम करतां ते अनुक्रमें, वरस थयां जब शोल ॥ नवयौवन नारी तणा, उलट्या काम कलोल ॥ ११ ॥ मात पिता हरखे घणुं, पुत्री देखी ॥ रतन्ना वरनी चिंता चित धरे, करतां कोटियतन्न ॥

॥ ढाल त्रीजी ॥

॥सुमति सदा दिलमां धरो॥ए देशी॥ तिण नगरीमें इक रहे,धीवर हरिबल नाम॥सनेही॥जलचर जीव हणे सदा,मेले डुष्कृत गाम ॥सनेही॥१॥ हवे सुणजो तेहनी कथा,मूकी सघलो प्रमाद ॥ स० ॥ साकर डाख तणी परें, विण पइसे ल्यो स्वाद ॥ स० ॥२॥ह०॥ धीवर ते जाणे नही, जीवदयानो धर्म ॥ स० ॥ उयम उदर ने कारणें, करे नित्य करणीकुकर्म ॥स०॥३ ॥ ह० ॥ धिग्धिग् डुरजर पेटने,पेट करावे वेठ ॥स०॥ उत्तम म ध्यम प्राणीने, पेट ते हरावे नेट ॥ स० ॥४॥ ह० ॥ पेटने कारणें जीवडा, जावे देश प्रदेश ॥ स० ॥ जावे जलनिधिमारगें, पेटने हेतविशेष ॥ स०॥५॥ह०॥अ गम्यांनी करणी करे, चोरी हेरी प्रत्यक्ष ॥स० ॥पेटना अर्थी जे अछे, न गणे नक्ष अनक्ष ॥स०॥६ ॥ ह०. घाल कला खेले घणुं, नडुआ नटवी जोर ॥ स० ॥ मावीत्र वेचे गेरुने, पेटने अर्थे घोर ॥ स०॥७॥ह०॥ जिनवरआदि मुनिवरा, जावें जे लीये दिख ॥ स० ॥ ते पण पेटने कारणें, घर घर मागे नीख ॥ स० ॥ ॥ ए ॥ ह० ॥ पांमव पांचे रडवड्या, पेटने कारणें धीर ॥ स० ॥ हरिचंद सरिखा राजवी, कुंच घरे

वह्यां नीर ॥ स० ॥ ए ॥ ह० ॥ तिम ए उदरने कार
णें, हरिवल मह्छी जेह ॥ स० ॥ धीवरकुल जनम ल
ही,जीव हणे छे तेह ॥स०॥१०॥ह०॥ हलुआकरमी छे
घणुं, पण ते लह्युं कुल नीच ॥स०॥ कुलाक सव आ
वी पड्यो, मेले ते कर्मना कीच ॥स०॥११॥ ह० ॥
एक दिन हरिवल मह्छीयें, जलमें नाखी जाल ॥स०॥
ते जलकंठें मुनिवरु, वेठो छे सुकृतमाल ॥ स० ॥
॥ १२ ॥ ह० ॥ हवे जलमें जाल नाखी तदा, मुनि
वोल्यो ततकाल ॥ स० ॥ धीवरने प्रतिवोधवा, दे उ
पदेश रसाल ॥ स० ॥ १३॥ह०॥ रे प्राणी ए तुं शुं क
रे, विण अपराधें कर्म ॥स०॥ छे महोटो संसारमां, जी
वदयानो धर्म ॥स०॥१४॥ह०॥ जीवदया पाली जिणें,
लहे कुल उत्तम सार ॥ स० ॥ दुर्गति पडतां जी
वने, धर्म निश्चें आधार ॥ स० ॥ १५ ॥ ह० ॥
पारेवुं शरणें राखवा, काप्युं ते निज अंग ॥स०॥ जो
तुं मेघरथ राजवी, दो पदवी लही रंग ॥ स० ॥१६॥
ह० ॥ शिवादेविनंदन नेमजी, तजि निज राजुल
नार ॥स०॥१७॥ह०॥ पशुवाडो छोडावियो,आणीमन
उपगार ॥स०॥ जीवदया जे पाले नही,पामे ते दुःख
अपार॥स०॥१८॥ह०॥सुभूम ब्रह्मदत्त चक्री दो,पडीया

नरक मझार ॥ स० ॥ १९ ॥ ह० ॥ माता पितादिक बंधवा, पामे वियोग ते मंद ॥ स० ॥ दालिद्र दोह्ग नवि टले, मले न वल्लभवृंद ॥ स० ॥ २० ॥ ह० ॥ हेम दिये को दिन प्रतें, देवे को दान सुपात्र॥स०॥ तेह्थी दश गणो लाभ छे, जीवजतन करे गात्र ॥ स० ॥ २१ ॥ ह० ॥ इम उपदेश ते सांभली, बोले मछी तिवार ॥ स० ॥ शुं करीयें अमें साधुजी,छे अम कुल आचार ॥स० ॥ २२ ॥ ह० ॥ धीवर कुलें आवी पड्या, क्यां रहे गुरुनुं ज्ञान ॥ स० ॥ आजीविका ए पेटनी,दीधी करमें निदान ॥स०॥२३॥ह०॥ ॥ पण गुरुजी तुम वचनथी, आजथी में पण लीध ॥ स० ॥ पहेली जालमां जीव जे, तेहने में जीवित दीध ॥ स० ॥ २४ ॥ ह० ॥ इणि परें अभिग्रह आदरी, हरिबल वलियो ताम ॥स०॥ मुनि पण ईर्य्या शोधता, पहोता बीजे गाम ॥ स० ॥२५॥ह०॥ हलुआ करमी जीव जे, तरत लहे उपदेश ॥ स०॥ भारे करमी जीवडा,माने नही लवलेश ॥ स० ॥ २६॥ ह० ॥ पापीने प्रतिबोधतां, पत पोतानुं जाय ॥ स० ॥ टपलो सरायें चडावीयें, आरीसो नवि थाय॥स० ॥ २७ ॥ ह० ॥ हरिबलनी परें प्राणीया, गुरुमुखें

होवे जेह ॥ स० ॥ गुरुनां वचन हृदय धरे, मनवं छित लहे तेह ॥ स० ॥ २८ ॥ हू० ॥ लब्धिविजय रंगें करी, नाखी ए त्रीजी ढाल ॥ स० ॥ हरिबल जीवदयाथकी, लेहशे मंगलमाल ॥ स० ॥ २९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ हरिबल अभिग्रह लेइने, पाछो वलियो जाम ॥ तिण अवसरें सुर प्रगटियो, सुस्थित जलनिधि स्वाम ॥ १ ॥ अवधी ज्ञानी देवता, रूप करे ततकाल ॥ धीवरनुं मन खोलवा, मछ हुवो सुगाल ॥ २ ॥ धीवर ते जलमें जइ, लांबी नाखी जाल ॥ आव्यो नराणो जालमां, लांबो मछ सुगाल ॥ ३ ॥ तव धीवर ते मछने, मूके करुणावंत ॥ गुरुनुं वचन हृदे धरी, पाले ते व्रतसंत ॥ ४ ॥ वली बीजे थानक जइ, ऊंडा द्रहमां जाल ॥ नाखी तव फरि मछ ते, आव्यो जाल मठराल ॥ ५ ॥ ते पण वलि मछ मूकीयो, नीयम निज संभार ॥ नाखी धीवर जलधिमां, जाल ते त्रीजी वार ॥ ६ ॥ वलि फरीने मछ आवियो, जाल मां त्रीजी वार ॥ ते पण धीवर मूकीयो, आणी मन उपगार ॥ ७ ॥ तव धीवर कहे फरि फरि, आवे ए जलमछ ॥ तो सहिनाणी हुं करुं, जिम ओलखाये

स्त्र ॥ ७ ॥ हरिवल चित्त इम चिंतवी, कर ग्रह्यो जलजात ॥ कोटें उलखवा सही, कोडी वांधी सात ॥

॥ ढाल चोथी ॥

॥ इमर आंवा आंवली रे ॥ए देशी॥ हरिवल हवे आघो गयो रे, उंडुं छे जल ज्यांह ॥ उरम्भर उदरने कारणे रे, जाल नाखी जइ त्यांह ॥ १ ॥ सूरिजन सांजलजो अवदात ॥ एतो रंग रसीली वात ॥ सू० ॥ फरी पाछो ते जालमां रे, आव्यो चोथी वार ॥ कोटें कोडी देखी करी,मूक्यो मछ विचार ॥२ ॥ सूरि० ॥ पांचमी छठी सातमी रे, फरि फरि नाखे जाल ॥ तेम तेम ते आवी रहे रे,जालमां मछ मुछाल ॥ ३ ॥ सू० ॥ तिम तिम ते मछ उलखी रे, मूकी घे ततकाल ॥ हरिवल व्रत महेल्युं नही रे, गुरु उपदेश रसाल ॥ सू० ॥ ४॥इम करतां दिन निर्गम्यो रे, मेहेनत करतां तेह ॥ तोही पण छोन्यो नही रे,मछी हरिवल जेह ॥ ॥ ५ ॥ सू० ॥ मछीनी परीक्षा लही रे, प्रगट थयो सुरराज ॥ सुर कहे हरिवल माग तुं रे, हुं तूठो तुऊ आज ॥ ६ ॥ सू० ॥ सुर वाणी ते सांजली रे, हरिवल वोल्यो तिवार ॥ दालिद्र दुःख दूरें करी रे, समस्या करजो सार ॥ ७ ॥ सू० ॥ सांजलि धीवर सुर

कहे रे, आणी मन उल्लास ॥ संभारिश मुफ जे घ
डी रे, ते घडी हुं तुफ पास ॥८॥ सू० ॥ एम वचन
देई करी रे, ते सुर गयो निज थान ॥ मछी पण निज
मंदिरें रे, चलियो थइ साव धान ॥ए॥सू०॥ धीवर म
नमें हरखियो रे, धन धन गुरुनुं वचन्न ॥ फलि
यो अभिग्रह माहरे रे, तूठो सुर दिन धन्य ॥ १० ॥
सू० ॥ सागर देव पसायथी रे, हुं थयो महोटो सनाथ
॥ आजथी जीव हणुं नही रे,जो ग्रही महोटी वाथ
॥ ११ ॥ सू० ॥ इम करतां संध्या थई रे, आव्यो न
यर नजीक ॥ पण निज मंदिर नारीनी रें, मनमें आ
णी बीक ॥ १२ ॥ सू० ॥ पेट भराइ जडी नही रे,
भांभशे रांभ कुहाड ॥ जाइश जो खाली घरे रे, वेस
शे लेई राड ॥ १३ ॥ सू० ॥ काली नागणनी परें
रे, रोपें भरी छे चंभ ॥ छोकरडांने मारे घणुं रे, बोले
ज्युं खोखर भंभ ॥१४॥ सू० ॥ मुखमांथी भोंग पडे
रे, कोइ बोलावे बोल ॥ वलगे वाघणनी परें रे, राखे
नहि तस तोल ॥ १५ ॥ सू० ॥ दीवालीनो परोडी
यो रे, दीसंती जाणे अलच्छ ॥ आंगण आवे को मा
नवी रे, देखी जाये गच्छ ॥ १६॥ सू० ॥ कूडा बोली
कर्कशा रे,दे वली अछतां आल ॥ गुण अवगुण जा

ऐ नहीं रे, परिणामें विकराल ॥ १७ ॥ सू० ॥ उ
तरे जे वर्ष सातनी रे, जेह पनोती कहाय ॥ पण
लागि पनोती जन्मनी रे, ते किम उतरी जाय ॥१८
॥ सू० ॥ जाणी बंबुल कोयला रे, एहवुं रूप नीहा
ल ॥ खाधानी संख्या नही रे, जाणीयें पेटमें काल
॥ १९ ॥ सू० ॥ धीवर कहे मुझ नारीनां रे, केतां क
रुं हुं वखाण ॥ पूर्ण पापना जोगथी रे, मली ए कर्म
प्रमाण ॥ २० ॥ सू० ॥ हरिबल चितशुं चिंतवे रे, न
जज्यो जलचर जीव ॥ घरे जावुं तो बोकडी रे, रूठी
करशे रीव ॥ २१ ॥ सू० ॥ ते माटे वनमें रही रे,
रजनी लेवं विशराम ॥ दिन उगे घर जाइशुं रे,
जडशे जीविक ताम ॥ २२ ॥ सू० ॥ इम जाणी ते
वननमें रे, हरिबल रहियो ताम ॥ कालीकाने देवलें
रे, लीधो तिहां विश्राम ॥ २३ ॥ सू० ॥ धीवर सू
तो चिंतवे रे, धन धन जीवदया धर्म ॥ एक में जीव
उगारीयो रे, तो वाधी मुझ शर्म ॥ २४ ॥ सू० ॥ तो
में निश्चें आजथी रे, हणवो नही कदि जीव ॥ जल
निधिनो धणी देवता रे, फलशे मुझ सदीव ॥ २५॥
सू० ॥ परतख देखी पारखुं रे, धीवर हरखें पइठ ॥
जीवदया धर्म उपरें रे, वेगो रंग मजीठ ॥ ॥ २६ ॥

सू० ॥ रजनी मध्य गई तिहां रे, हरिबल सूतो ज्यां ह ॥ तिण अवसरें जे नीपजे रे, ते सुणजो उछाह ॥ सू० ॥ २७ ॥ चोथी ढाल पूरी थई रे, प्रगटी पुण्यनी वेल ॥ लब्धि कहे गुरु देवथी रे, नाखीयें दुःखने ठेल ॥ २७ ॥ सू० ॥

॥ दोहा ॥

॥ हवि तिण नगरीमां वसे, बीजो हरिबल नाम ॥ वडवखती सुखीयो सदा, व्यवहारी अभिराम ॥ १ ॥ पठित गुणित सघली कला, शीख्यो छे सावधान ॥ रूपें रतिपति सारिखो, उपे रूप निधान ॥ २ ॥ चतुराइ तो चकोर ज्युं, कंठें कोकिल कंठ ॥ भोगी केतकी भ्रंग ज्युं, वाको वंस निगंठ ॥ ३ ॥ इक दिन चहुटे संचस्यो, लेइ निज परिवार ॥ नजरें हरिबल निरखियो, कुमरीयें गोख मझार ॥ ४ ॥ वसंतसिरी नृपनी धुआ, उलखी हरिबल तेह ॥ बिहुंनी दृष्टि मिली तिहां, वाध्यो नवलो नेह ॥ ५ ॥ कुमरीनुं मन वेधियुं, देखी हरिबल रूप ॥ कामातुर अतिही थई, वरवानी थइ चूंप ॥ ६ ॥ राजभुवनने मारगें, हरिबल चाल्यो जाय ॥ गोखतलें आव्यो जिसे, खिण एक तिहां विलमाय ॥ ७ ॥ गोखेंथी पत्री लखी, पडती

मेहली तेह ॥ हरिबल वांची समजियो, वस्र तुं मुज ससनेह ॥ ८ ॥ ऊंची दृष्टि जोइने, करी समस्या सार ॥ वाचा देइ आवियो, हरिबल निज आगार ॥९॥ कुमरीयें पत्री जे लखी, ते सुणजो अधिकार ॥ राम नुं सुहणुं नरत परि, फलशे ते श्रीकार ॥ १० ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

॥ निंदडी वेरण हुइ रही ॥ ए देशी ॥ हांजी काली चउदशने दिने, कालिकानुं हो देवल ठे ज्यांह के ॥ अखुट खजानो लेइने, मध्यरात्रें हो हुं आवुं बुं त्यांह के ॥ १ ॥ कुमरीयें पत्रीयें लखी, हरि वलने हो तिहां कीधो संकेत के ॥ शीघ्रगति तुमें आवजो, वरवाने हो घणुं आणी हेत के ॥ कु० ॥ २ ॥ व्यवहारी हरख्यो घणुं, कुमरीनुं हो देखीने चित्त के ॥ एतो साचें आवशे, निज घरनुं हो लेईने वित्त के ॥ कु० ॥ ॥३॥ पण ए नृपनी नंदिनी,मुजथी केम हो निरवाहो थाय के ॥ किहां शशली किहां सिंहनी, किहां हंसिणी हो किहां बगलुं कहाय के ॥ कु० ॥ ४॥ किहां अलसी किहां नागणी,किहां हायणी हो किहां अज वलवंत के ॥ किहां कुमरीने हुं कीहां, किहां सरशव हो किहां मेरु महंत के ॥ कु० ॥ ५ ॥ जाति गरीब न्रणी

क तणी, भर राखे हो सघले संसार के ॥ तो किम कुं वरी हुं वरुं, उठी जावे हो जेह छे व्यवहार के ॥कुं०॥ ॥ ६ ॥ जो नृप जाणे वातडी, घडि एकमें हो नाखे तस वेर के ॥ सबल कुटुंब जे पलकमें, लुसी मूके हो तेहमें नही फेर के ॥ कुं० ॥ ७ ॥ तो किम वात ए हुं करुं, कुल लाजे हो निज तातनुं जेह के ॥ मुज घ रमें छे पदमणी, किम देहुं हो तेहने हुं छेह के ॥ ८॥ कुं० ॥ कडुवां फल छे एहनां, परनारी हो साथें धरें राग के ॥ पग पग दोष लहे घणो, नवि पामे हो कि हां बेगानो लाग के ॥ ए ॥ कुं० ॥ किंपाकनां फल सारिखां, देखंतां हो घणुं फूटडां जोर के ॥ पण ते फल चाख्याथकी, जीव पामे हो मरणांत कठोर के ॥ १० ॥ कुं० ॥ जगमें चाले वातडी, करे हासी हो सहु मलीने लोक के ॥ जिन वचनें पण जाणीयें, डुर्गतिनां हो फल पामें रोक के ॥ ११ ॥ कुं० ॥ राव ण मुंज तणी परें,शीश रडवडे हो नूमितलें जेह के ॥ परनारीना संगथी, वीजानी हो गति निपजे एह के ॥ १२ ॥ कुं०॥ इम जाणी मन वालियुं, व्यवहारी हो निज कुल संन्नाल के ॥ तिहां जावुं नही माहरें, जिहां कीधो हो संकेत विशाल के ॥ १३ ॥कुं० ॥ हवे

कुमरी विरहें करि, थाये व्याकुल हो जावाने तेह के ॥ केइ घडी छे एहवी,जइ देखुं हो हरिबल ससनेहके ॥ १४ ॥ कुं० ॥ जेहने लागे प्रीतडी, जाणे तेहने हो लाग्युं छे प्रेत के ॥ शूनी फरे तस देहडी, विरहानल हो चूसी बल लेत के ॥ १५ ॥ कुं० ॥ मन लाग्युं जस उपरें, तस आगल हो बीजो न सुहाय के ॥ खिण घरमें खिण आंगणे, रहि न शके हो जाणे लागी वलाय के ॥ १६ ॥ कुं० ॥ बुद्धि अकल जाये परी, नवि उकले हो निज घरनुं काम के ॥ कुरि कुरि पंजर कृश करे, कामी मन हो लुब्ध्युं जे ठाम के ॥१७॥ कुं० ॥ मात पितादिक नवि गणे, नवि माने हो निजकुल मरजाद के ॥ गुरु गोत्रज पण नवि गणे, विरहें करि हो मांमे उनमाद के ॥ १८ ॥ कुं० ॥ कुमरी कामातुर थई, हरिबलनो हो विरहो न खमाय के ॥ अन्न उदक दो नवि रुचे, वरवाने हो घणुं आकुली थाय के ॥ १९ ॥ कु० ॥ मणि माणिक हीरा घणा, हेम रजत नें हो मुगताफल लेय के ॥ थरमां पामरी सावटु, जरतारी हो नलां वस्त्र भरेय के ॥२०॥ कुं० ॥ सामग्री सघली करी, जावाने हो जिहां कीधो संकेत के ॥ उंट सात भरिया भला,अश्व रतन हो

कुमरी दो लेत के ॥ २१॥ कुं० ॥ रजनी मध्य समे वही, दास दासी हो वलि साथें लीध के ॥ दरवाजे दरवानने, द्रव्य आपी हो घणुं राजी कीध के ॥ २२॥ कु० ॥ पोल उघाडी पोलीये, वहि कुमरी हो जिहां संकेत कीध के ॥ कालीकाने देउलें, तिहां पहोती हो मनवंछित सिद्ध के ॥ २३ ॥ कु० ॥ धीवर सूतो छे जिहां, तिहां कुमरी हो आवी उजमाल के ॥ ल ब्धि विजय रंगें करि, ढाल पांचमी हो कही रंग रसाल के ॥ कु० ॥ २४ ॥

॥ दोहा ॥

॥ कुमरी कहे जागो प्रभु, मूको निद्रा दूर ॥ आपण वहीयें बे जणां, आगल पंथ सनूर ॥ १ ॥ अखुट खजानो लेइने, आवी छुं नरपूर ॥ करहा सात द्रव्यें न स्या, एह बे तूम हजूर ॥ २ ॥ अश्व रत्न दो लेइने, आवी छुं तुम कज्ज ॥ उंघ तजी उतावला, आवी च डो थइ सज्ज ॥३॥ हरिबल वणीक ते जाणीने, विन वे कुमरी ताम ॥ धीवर सूतो जागीयो, केहने कहे अ भिराम ॥४॥ हरिलंकी अप्सर समी, देखी कुमरी रूप ॥ धीवर मन विव्हल थयुं, ए शुं दीसे सरूप ॥ ॥ ५ ॥ चमत्कार चित्तमें लही, धीवर चिंते ताम ॥

कोइक वात विचार ठे, मौन कख्यानुं काम ॥ ६ ॥ अणबोल्यो ऊठयो तुरत, करी असवारी सार ॥ कुम री मन हरखित थई, चाल्यां पंथ विचार ॥ ७ ॥ पा णीपंथा घोडला, तेहवुं करहा जोर ॥ पंथें चाल्या चडवडी, पहोतां जे वन घोर ॥ ८ ॥ वसंतसिरी कु मरी हवे, टाली सवली बीक ॥ हरिवलने बोलाववा, आवी पासं नजीक ॥ ए ॥

॥ ढाल ठ्ठी ॥

॥ पारकर देशथी आयो ॥ ए देशी ॥ हवे हरिवल प्रज्जुजी बोलो, मनवच्छन मनडुं खोलो रे ॥ माहरा जीवनजी तुमें बोलो ॥ हवे कोई भर मत आणो, प्रज्जु मेल्यो तुम भ्रम टाणो रे ॥ मा० ॥ १ ॥ मुक सरखी तुम नारी, विण पैसे मलि सुख कारी रे ॥ मा० ॥ कनक रयण ने सार्थे, तुमें वावरो सुखें निज हार्थे रे ॥ मा० ॥ २ ॥ पेहरो नव नवा वाघा, जरतारी वां धो पाघा रे ॥ मा० ॥ खटरस रसवती सारी, करी पीरसुं मोहनगारी रे ॥ मा० ॥ ३ ॥ तुम संगें रहुं क र जोडी, करुं टेहल ते आलस ठोडी रे ॥मा०॥ हुं हुं तुम प्रेम विलुब्धी, आवी हुं हुं तुम सूधी रे ॥ मा० ॥ ॥ ४ ॥ हवे तुम बयण न लोपुं, जीवित लगें वरमा

ला रोपुं रे ॥ मा० ॥ करह्या जे साते उप्या, लेई तुम शुं
जे सोंप्या रे ॥ मा० ॥ ५ ॥ तन मन धन तुम केरुं,
करि लेखवजो ए नलेरुं रे ॥ मा० ॥ एक तुम मेहे
रनी आशा, अमें राखुं प्रेमना पाशा रे ॥ मा० ॥६॥
इणि परें कुमरी बोले, पण हरिबल वाचा न खोले
रे ॥ मा० ॥ तव तिहां कुमरी विमासे, शुं ठे ए वणि
क न नासे रे ॥ मा० ॥ ७ ॥ इम करतां थयुं ते वा
हाणुं ॥ दीतुं मुख श्याम ज्युं नाणुं रे ॥मा० ॥ दिन
उगमतें ते दीठो, दीन वस्त्र विहूणो धीठो रें ॥ मा०॥
॥ ८ ॥ जाणे आलोकनो पिंम, जाणे पाड्यो देवें
दंम रे ॥ मा०॥ देही ठे गलीयल वान, वलि जाणे को
किल मान रे ॥ मा० ॥ ए ॥ जाती धीवर जाणी, त
ख व कुमरी मन उलजाणी रे ॥ मा० ॥ सुंदरी थई ते
स्या, गशी, चिंते थइ हाणी ने हासी रे ॥ मा० ॥१०॥
आवी ु रज केरे नरूसे, फल चाख्यां आक आलूसे रे
डो थइ स जाण्युं सुरतरु पामी, पण निमज्यो कनक
वे कुमरी त ॥ ११ ॥ मा०॥ प्रनुयें मेरुयें चढावी, पण
अभिराम ॥४॥ डावी रे ॥ मा० ॥ कुल मरजादा मूकी,
रूप ॥ धीवर म ति चूकी रे ॥ मा० ॥ १२ ॥ करस
॥ ५ ॥ चमत्कार ना गोफण पण खोई रे ॥ मा० ॥

तिम ए अखाणो मेल्यो, निज मंदिर कुल अवहेल्यो रे ॥ मा० ॥ १३ ॥ जाण्युं जोबनवेशें, लेशुं ते ला हो विशेषें रे ॥ मा० ॥ उलस्यो मदन एराकी, तव वणिकें मूकी न वाकी रे ॥ मा० ॥ १४ ॥ विटल वणिकें विमासी, दीधी ज्युं कूपके फांसी रे ॥ मा०॥ वणिकनो जे करे संग, तस जनम ते खोटो ढंग रे ॥ मा० ॥ १५ ॥ जाण्युं जे वणिकने वरशुं, निज जनम ते सफलो करशुं रे ॥ मा० ॥ पापीयें वाचा न पाली, विण गुनहे मूकी वाली रे ॥ मा० ॥ १६ ॥ जननी तात मूकावी, मूकी ते विरह जगावी रे ॥ ॥ मा० ॥ जो तुज खोटा दिलासा, तो शाने दीजें आशा रे ॥ मा० ॥ १७ ॥ फिट रे देव तुं हेल्यो, धी वरने किहां ते मेल्यो रे ॥ मा० ॥ तें किहां रची ए गोडो, कयो अण मलतो ए जोडो रे ॥ मा० ॥१८॥ दीसे ए धोवड धिंग, वलि जाणे फवके ऊोटिंग रे ॥ मा० ॥ जगती जोतां जडियो, मुज करमें ए वर घडियो रे ॥ मा० ॥ १९ ॥ शी विधें मुज मन वेसे, माहारुं जोवन एलें वहेशे रे ॥मा०॥ इम सुंदरी विलपंती, लही मूर्छा पडी ते धरती रे ॥ मा० ॥ २० ॥ तव तिहां धीवर फूरे ॥ मनशुं ते प्रण्य अधूरे रे ॥

॥ मा० ॥ में ते ए शुं कीधुं, निज मंदिर मूकी दीधुं रे ॥ मा० ॥ २१ ॥ लवलेश पोंक न खाधो, निजकर्मैं हाथे दाधो रे ॥ मा० ॥ जे कहे लोक वखाणो, ते में तो नजरें पिछाण्यो रे ॥ मा० ॥२२॥ फोगट सुंदरी साथ, आवी खोई घरनी आथ रे ॥ मा० ॥ ए दुःख के हने दाखुं, एहवो नही कोइ नाखुं रे ॥ मा० ॥२३ ॥ सुख दुःख जे लख्यां पाने, ते भोगवे जीव एक ताने रे ॥ मा० ॥ धीवर मनमें विमासे, रोइ राज न पामे उल्लासें रे ॥ मा० ॥ २४ ॥ एतो सुंदरी मोहोटी, कि म रांक घरे रहे त्रोटी रे ॥ मा० ॥ रूपें रंजसमान, किम सुंदरी दे मुझ मान रे ॥ मा० ॥ २५ ॥ धिग मुझ जीवित एह,धीवर पणुं लह्युं में जेह रे ॥मा०॥मा हरुं कुरूप देखी, कुमरीयें नाख्यो उवेखी रे ॥ मा० ॥ ॥२६ ॥ धिग धिग जाति अकामी, मुझ देखी मूर्छा पामी रे ॥ मा० ॥ धीवर दुःखीयो अपार, वहे नय णें आंसु धार रे ॥ मा० ॥ २७ ॥ किहां गयो सागर देव, मुझ काम पडे इहां हेव रे ॥ मा० ॥ सुंदरी जे मूरछाणी, करे जीवित ते सुख खाणी रे ॥ मा० ॥ ॥ २८ ॥ जलनिधि सुर तव आवे, धीवरने हर्ष उपा

वे रे ॥ मा० ॥ लब्धि कहे ढाल छठी, कुमरीने करे
हवे वेठी रे ॥ मा० ॥ १९ ॥

॥ दोहा ॥

॥ धीवर तनमें संक्रमे, तत्तखिण सागर देव ॥ अमृत जल लेई करी, कुमरी छांटी हेव ॥ १ ॥ रंना फल पत्रें करी, कस्यो पवन उपचार ॥ तव कुमरी साजी थई, पामी चेतन सार ॥ २ ॥ आंख उघाडी निरखियुं, हरखिल केरुं रूप ॥ वाला चमकी चित्तमें, ए शुं देव सरूप ॥ ३ ॥ कालो वरण मटी गयो, प्रगट्यो सोवन वान ॥ अद्भुत कांति शरीरनी, दीपे देव समान ॥ ४ ॥ एतो धीवर कुल नहीं, मन इम चिंते वाल ॥ ए साचुं के सूहणुं, के दीसे इंद्र जाल ॥ ५ ॥ तिण समे सुरवाणी थई, सांजल कुमरी सुजाण ॥ हरखिल मही रूप ए, वर तुं पति गुण खाण ॥ ६ ॥ एह थकी सुख संपदा, दिन दिन अधिकी होय ॥ जाग्यवलें तुऊ वर मल्यो, अण चिंतवियुं सोय ॥ ७ ॥ तव कुमरी हरखित थई, सांजली देव वचन्न ॥ आरत चिंता सवि टली, उलस्युं ते निज मन्न ॥ ८ ॥ वसंतसिरी हरखिल प्रतें [illegible] ीत ॥ श्री

मन

पय प्रणमी हरिबल तणा, देई वर ससनेह ॥ सागर सुर निज थानकें, पहोतो ते गुणगेह ॥ १०॥ मान व नव सफलो करी, दंपती नोगवे नोग ॥ रामनुं सुहणुं नरतने, फलियुं पुण्य संयोग ॥ ११ ॥

॥ ढाल सातमी ॥

॥ शीयालो नलें आवियो ॥ ए देशी ॥ हुआ हे हरख वधामणां, बेहु जणनां हे मनवंछित सीध के ॥ कुंमरी हरिबल वर वरी, मनुनवनो हे फल लाहो लीध के ॥१॥ हु० ॥ किहां नृपनंदिनी सुंदरी, किहां हरिबल हे मछी अवतार के ॥ अणमलतो ए ताकडो, पुण्यजोगें हे मेल्यो किरतार के ॥ २ ॥ हु० ॥ एक में जीव उगारीयो, तस पुण्यथी हे तूठो निधि राज के ॥ परतख दीठुं पारखुं, गुरुवयणथी हे मुफ वाधी लाज के ॥ ३ ॥ हु० ॥ धन धन गुरुनां वयणने, मुफ कीधो हे महोटो उपगार के ॥ कीडीथकी कुंजर कस्यो, नलें प्रगट्यो हे सद्गुरु संसार के ॥ ४॥ हु० ॥ इम चिंतवतां बे जणां, पंथें चाल्यां हे ते वन हमजार के ॥ रंग विनोदनी वातडी, वहे करतां हे एक चित्त उदार के ॥ ५ ॥ हु० ॥ वाट विषम जे आकरी, गिरि गव्हर हे वली विषमा घाट के ॥

अंगि झाडी जे रूंखनी, परि वतथा हे निज पुण्यने पाट के ॥ ६ ॥ हु० ॥ तिण समे कुमरी चिंतवे, न वि जाणुं हे पियुनी कुल नाति के ॥ तो ह्वे जोवुं एह्नी, करुं परीक्षा हे ए शी छे जाति के ॥७॥ हु०॥ जोवुं वली तस पारखुं,पराक्रमें हे केह्वो छे सधीर के॥ जीवित सूधी माह्रो, मन राखी हे केह्वो मेले हीर के ॥ ८ ॥ हु० ॥ तव प्यारी पियुने कहे, सुणो प्री तम हे थया खरा बपोर के ॥ पाणीनी तिरपा घ णी, पीयु लागी हे घणुं अति हे जोर के ॥९॥हु०॥ तव हरिबल तिहां सज थयो, अबलानां हे सुणी दीन वचन्न के ॥ केड बांधी काठी खरी, नीर जोवा हे निकल्यो ते वन्न के ॥ १० ॥ हु० ॥ अटवीमां जो तो फरे, नवि दीसे हे क्यांह् नदी नवाण के॥ तव एक तरु ऊपर चढी, दृष्टें जोवे हे चिहुं दिशि जल ग ण के॥ ११ ॥ हु० ॥ तव तिहां दूरथी पेखियो, सरो वर हे जल नरियुं नीर के ॥ तिहां जइ जल नरि पो यणें, लावि पावे हे निज प्यारीने नीर के ॥ १२ ॥ हु० ॥ अंग ठर्यां जल पीवतां, मनथी लह्यो हे पियु माहावलवंत के ॥ हरखित थइ तव सुंदरी, मुज व खतें हे पियु मलियो संत के ॥ १३ ॥ हु० ॥ धन्य

दिवस धन ते घडी, धन वेला हे मुऊ प्रगट्यां नाग्य के ॥ मनवंछित पियुडो मल्यो, थयां परगट हे मुऊ सुख सौनाग्य के ॥ १४ ॥ हु० ॥ सुरवाणी साची मली, जेवी नाखी हे तेहवी नजरें दीठ के ॥ मुह मा ग्या पासा ढल्या, राजकुमरी हे मन हरख पइठ के ॥ १५ ॥ हु० ॥ दंपती बेहुने प्रीतडी, एकतारी हे ब नी ज्युं नख मांस के ॥ एकंगी जल मीन ज्युं,तिम बें हुने हे बनीयुं तन हंस के ॥ १६ ॥ हु० ॥ इम क रतां ते अनुक्रमें, विघनाटवी हे परि उतस्यां तेह के॥ दूरथी दीठुं सोहामणुं, एक मोटकुं हे शोनित डिं ग जेह के ॥ १७ ॥ हु०॥ कनकजडित डिंग डुर्ग छे, कोशीसां हे मणिमय दीपंत के॥ जाणीयें नूरमणी करें, सोहे कंकण हे रवितेज झिपंत के॥१८॥हु०॥ नं दन वन सम वाटिका,फलि फूली हे चिहुं दिशि सोहंत के ॥ सजल सरोवर जल नस्यां, देखीने हे वर नारी मोहंत के ॥ १९ ॥ हु० ॥ नगर समीपें आवीयां, वाडीमां हे उतारा कीध के ॥ तिण समे तिहां एक आवियो, वैताल कहे नलि आशिष दीध के ॥ २० ॥ हु० ॥ पूछे हरिवल तेहने, कहो बारोट हे आ नग रीनुं नाम के ॥ कुण नृप राज्य करे इहां, अधिकारी